भारत सरकार
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग

लोक सभा
अतारांकित प्रश्न सं. 1338

दिनांक 30 जुलाई, 2024

कृषि पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव

1338. श्री राजीव राय:

क्या **कृषि और किसान कल्याण मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार ने पिछले पांच वर्षों के दौरान देश के उत्तरी मैदानी इलाकों, विशेष रूप से उत्तर प्रदेश राज्य के किसानों के संबंध में तापमान में वैश्विक वृद्धि और जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों को कम करने की दिशा में कोई बड़ा कदम उठाया है; और

(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं?

उत्तर

कृषि और किसान कल्याण राज्य मंत्री
(श्री भागीरथ चौधरी)

(क) एवं (ख): जी, हां। सरकार ने टिकाऊ कृषि के लिए राष्ट्रीय मिशन (एनएमएसए) और आईसीएआर की अग्रणी नेटवर्क परियोजना जलवायु अनुकूल कृषि में राष्ट्रीय नवाचार (एनआईसीआरए) के माध्यम से देश के उत्तरी मैदानी इलाकों सहित उत्तर प्रदेश राज्य (यूपी) में वैश्विक चेतावानी तथा जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभाव को कम करने के लिए कदम उठाए हैं।

सरकार वर्ष 2010 से देश में टिकाऊ कृषि के लिए राष्ट्रीय मिशन (एनएमएसए) लागू कर रही है। मिशन का उद्देश्य भारतीय कृषि को बदलती जलवायु के प्रति अधिक अनुकूल बनाने के लिए कार्यनीति विकसित करना और उसे लागू करना है। एनएमएसए के तीन प्रमुख घटक हैं अर्थात् वर्षा आधारित क्षेत्र विकास (आरएडी); खेत पर (ऑन फार्म) जल प्रबंधन (ओएफडब्ल्यूएम); और मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन (एसएचएम)। इसके बाद, मृदा स्वास्थ्य कार्ड (एसएचसी), परम्परागत कृषि विकास योजना (पीकेवीवाई), प्रति बूंद अधिक फसल, राष्ट्रीय बांस मिशन (एनबीएम) आदि जैसे नए कार्यक्रम भी शामिल किए गए। ये स्कीम यूपी राज्य के किसानों के साथ-साथ अन्य राज्यों के किसानों के लिए जलवायु अनुकूल कृषि का समर्थन करती है।

सरकार ने उत्तर प्रदेश के किसानों समेत अन्य किसानों को जलवायु संबंधी खतरों से बचाने के लिए खरीफ 2016 से प्रमुख उपज आधारित प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना (पीएमएफबीवाई) के साथ-साथ पुनर्संरचित मौसम आधारित फसल बीमा योजना (आरडब्ल्यूबीसीआईएस) भी शुरू की है।

आईसीएआर ने खाद्य उत्पादन में सुधार के लिए जलवायु-अनुकूल फसल किस्मों का विकास किया है। वर्ष 2014 से, कुल 2177 जलवायु-अनुकूल किस्में विकसित और जारी की गई हैं, जिनमें 445 ऐसी जलवायु-अनुकूल किस्में शामिल हैं जो सूखा, बाढ़, गर्मी, ठंड और लवणता के प्रति सहनशील हैं। इनमें, सूखे के प्रति सहनशील किस्में 249, बाढ़ के लिए 72, लवणता के लिए 62, ताप दबाव के लिए 45 तथा शीत सहिष्णु 17 किस्में देश के उत्तरी मैदानी इलाकों सहित विविध पारिस्थितिकी के लिए उपयुक्त हैं।

उत्तर प्रदेश में 17 जिलों यथा बागपत, बहराईच, बांदा, बस्ती, चित्रकुट, गोंड़ा, गोरखपुर, हमीरपुर, जालोन, झांसी, कानपुर (देहात), कौशाम्बी, कुशी नगर, महाराजगंज, प्रतापगढ़, संत रविदास नगर और सोनभद्र से एक-एक गांव समूह को एनआईसीआरए के माध्यम से वर्ष 2011 से जलवायु-अनुकूल कृषि प्रौद्योगिकी अपनाने के लिए चयन किया गया था।

****